पूर्णचन्द्र के प्रकाश में मुदित हो जाएँ

१ जुलाई, २०२०

आत्मीय पाठकगण,

आज-कल चन्द्रमा से मेरा प्रेम और भी अधिक गहरा हो गया है। कई वर्षों तक मैं एक पहाड़ी वनप्रदेश में रहा जहाँ पर अक्सर बारिश या बूँदा-बाँदी होती रहती थी और मैंने शायद ही चन्द्रमा के बारे में कभी सोचा होगा। अब, दक्षिण पश्चिमी अमरीका में अरीज़ोना के ऊँचे रेगिस्तान में रहते हुए मैं लगभग हर रात—और कभी-कभी सुबह और दोपहर में भी—चन्द्रमा के दर्शन करता हूँ! चन्द्रमा का पूर्णता की ओर बढ़ना और फिर पूर्णता से नन्हे-से नवचन्द्र की ओर घटना मुझे बहुत पसन्द है। परन्तु मेरे मन और हृदय को जो सबसे अधिक मन्त्रमुग्ध करता है, वह है पूर्णचन्द्र। यह कितना पास, कितना पूर्ण, कितना *जीवन्त* लगता है।

गुरुपूर्णिमा पर हमारे पास सुअवसर होता है, उसका अनुभव करने का जिसे भारत के पवित्र शास्त्रग्रन्थ वर्ष का सबसे मंगलमय पूर्णचन्द्र मानते हैं जो है, श्रीगुरु को समर्पित पूर्णचन्द्र। यह दिन विशेष रूप से श्रीगुरु का सम्मान करने व उनकी उपासना करने के लिए समर्पित शक्तिपूरित दिवस है जब हम श्रीगुरु से प्राप्त कृपा व ज्ञान के लिए उन्हें अपनी कृतज्ञता अर्पित करते हैं।

पूर्णचन्द्र रात्रि के आकाश में एक सुन्दर व उद्‌बोधक उपस्थिति है। वास्तव में, हम *हरेक* पूर्णचन्द्र को एक सटीक स्मरणिका मान सकते हैं जो हमें श्रीगुरु से प्राप्त कृपा की प्रचुरता का और अपनी अन्तर-सत्ता में श्रीगुरु की उपस्थिति की पूर्णता का स्मरण कराता है। क्या आपने कभी सोचा है कि सूर्य के दृष्टिकोण से चन्द्रमा हमेशा ही पूर्ण होता है क्योंकि वह हमेशा ही पूरी तरह से सूर्य की ओर मुख किए होता है। उसी तरह श्रीगुरु सदैव, अन्तर-प्रकाश के परम स्रोत के साथ, ईश्वर के साथ पूर्णतया एकलय हैं और वे कृपा के उस दिव्य प्रकाश व प्रज्ञान को हम पर पूरी तरह प्रतिबिम्बित करती हैं।

'पूर्ण' संस्कृत भाषा का शब्द है। कई वर्ष पूर्व मैंने गुरुपूर्णिमा के दिन चन्द्रमा के साथ और 'पूर्ण' शब्द के साथ एक अटूट सम्बन्ध का अनुभव किया। मैं और मेरी पत्नी कई व्यक्तिगत और व्यावसायिक कारणों से यूरोप में थे, और उस दिन सुबह-सुबह हम टैक्सी से बर्लिन के हवाईअड्डे जा रहे थे जब मुझे अचानक गुरुपूर्णिमा का स्वर्णिम चन्द्र दिखाई दिया जो पश्चिम दिशा में अस्त हो रहा था और सूर्य पूर्व दिशा में उदित हो रहा था। पूर्ण चन्द्र हल्के-हल्के बादलों के पर्दे के पीछे से आँख-मिचोली खेल रहा था।

मुझे याद आया कि इस समय जब जर्मनी में सूर्योदय हो रहा है तब न्यूयॉर्क में काफ़ी रात हो चुकी होगी और मैंने कल्पना की कि हो सकता है गुरुमाई जी भी गुरुपूर्णिमा के चन्द्रमा को देख रही होंगी, और रात्रि के आकाश में बिखरी उसकी तेजस्विता को निहार रही होंगी। उस क्षण मुझे गुरुपूर्णिमा के साथ एक नए जुड़ाव का अनुभव हुआ। पहले यह रहस्यपूर्ण लगता था—श्रीगुरु का सम्मान एक विशेष पूर्णचन्द्र पर ही क्यों करें? फिर, गुरुपूर्णिमा को समझने के बजाय मैंने यह कल्पना की कि श्री मुक्तानन्द आश्रम के रात्रि-आकाश में गुरुमाई जी भी पूर्ण चन्द्रमा का आनन्द ले रही होंगी। ऐसा करते ही मैंने मन में सुना कि गुरुमाई जी धीरे-से और प्रसन्नता के साथ शब्द "पूर्ण" कह रही हैं। फिर मैंने उन्हें "पूर्ण" शब्द को बार-बार दोहराते हुए सुना, उनकी आवाज़ में उत्साह और खुशी की खनक थी।

मैं सोचने लगा कि न जाने आनन्द की ऐसी तीव्रता कैसी महसूस होती होगी और मैं एक उल्लासपूर्ण तेजस्विता को अपने अन्दर उन्मीलित होता हुआ महसूस करने लगा। शब्द "पूर्ण" बड़ी प्रबलता से मेरे अन्दर से उभरता रहा और मैंने सोचा कि यह सब कुछ कितना *सम्पूर्ण,* कितना *पूर्ण* है—प्रकृति की प्रचुरता, भगवान की अविचल उपस्थिति, श्रीगुरु की अनवरत कृपा व उनका प्रेम। अब मैं पाता हूँ कि जिसे मैं वर्ष के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पूर्णचन्द्र के रूप में जानता हूँ, उसमें दिव्य पूर्णता की यह भावना नैसर्गिक रूप से प्रतिबिम्बित होती है।

इस वर्ष गुरुपूर्णिमा विश्व के पश्चिमी भाग में ४ जुलाई को—और भारत में ५ जुलाई को मनाई जाएगी। इस पूरे माह चन्द्रमा की अनुभूति करने का एक तरीक़ा है सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर 'Waxing Moon of Gurupurnima' [पूर्णता की ओर बढ़ता हुआ गुरुपूर्णिमा का चन्द्रमा] की शानदार तस्वीरों को देखना जो विश्वभर से सिद्धयोगियों ने इस महोत्सव के पहले के दो सप्ताहों में भेजी हैं। अब हर दिन इस गैलरी में नई तस्वीरें पोस्ट की जा रही हैं और इसका समापन गुरुपूर्णिमा के पूर्णचन्द्र की तस्वीरों के साथ होगा। आप भी गुरुपूर्णिमा के चन्द्रमा की तस्वीरें भेज सकते हैं [submit photographs] और महोत्सव मनाने के इस अनोखे तरीक़े में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।

लगभग हर साल मैं और मेरी पत्नी, सिद्धयोग ध्यान केन्द्र या फिर संकीर्तन एवं ध्यान समूह पर जाकर गुरुपूर्णिमा के महोत्सव सत्संग में भाग लेते हैं जहाँ हम अन्य सिद्धयोगियों के साथ मिलकर नामसंकीर्तन और ध्यान करते हैं व अपने हृदय में श्रीगुरु की उपस्थिति का आवाहन करते हैं। इस वर्ष महामारी के बीच अपना जीवन जीते हुए हम घर पर महोत्सव मनाएँगे—यह मुझे उन असाधारण साधनों के लिए अत्यधिक कृतज्ञता से भर देता है जिन्हें श्रीगुरुमाई सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के माध्यम से उपलब्ध करा रही हैं।

भगवान नित्यानन्द की चान्द्र पुण्यतिथि

१७ जुलाई को हम भगवान नित्यानन्द की चान्द्र पुण्यतिथि मनाएँगे—वह दिन जब चन्द्रतिथि के अनुसार बड़े बाबा अपनी भौतिक देह का त्याग कर ब्रह्मलीन हो गए थे। वर्ष २०१२ में इस दिवस की पचासवीं वर्षगाँठ पर गुरुमाई जी ने एक प्रवचन दिया था जिसका शीर्षक था, 'नित्यानन्दं चरणं शरणम्'। इस प्रवचन में उन्होंने हमें स्मरण कराया कि हम जहाँ कहीं भी हों, बड़े बाबा जी का सम्मान करने के लिए "हृदय की दृष्टि से" उपस्थित रह सकते हैं। इस वर्ष १७ जुलाई को हम सब इस महोत्सव में भाग ले सकते हैं, "हृदय की दृष्टि से" बड़े बाबा जी का सम्मान कर सकते हैं—अपने नामसंकीर्तन व ध्यान के अभ्यास द्वारा और सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट किए गए 'श्रीअवधूतस्तोत्रम्' का पाठ करके।

श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश का अध्ययन व अन्वेषण

हाल ही में मेरे एक मित्र ने मुझे मेलबोर्न में रहने वाली एक सिद्धयोग विद्यार्थी के बारे में बताया जो 'श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश पर अभ्यास-पुस्तिका' को इस वर्ष के लिए अपने सिद्धयोग अध्ययन का मुख्य साधन बना रही हैं। वे हर रोज़ इसका अभ्यास करती हैं। मैंने इन युवती से अभ्यास-पुस्तिका के इनके अनुभव के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि उन्हें ख़ास तौर पर श्रीगरुमाई द्वारा प्रदान किए गए प्रश्न अत्यन्त प्रिय हैं जिनसे हर अभ्यास-पत्र की शुरुआत होती है और जो एक विद्यार्थी के वर्ष २०२० के सन्देश के अन्वेषण को दिशा देते हैं। उन युवती ने कहा, "मैं श्रीगुरुमाई के प्रश्न को पूरे सप्ताह अपने बोध में बनाए रखती हूँ। मैं चलते समय, रात का भोजन बनाते समय, बर्तन धोते समय इनके बारे में सोचती रहती हूँ . . . मैं हमेशा से यह चाहती थी कि मुझे श्रीगुरुमाई के साथ संवाद करते रहने का भाव महसूस हो," उन्होंने आगे कहा, "और अब मैं हर समय इसी भाव में होती हूँ।"

यह बात मुझे गहराई से छू गई और मैं सोचने लगा कि यही तो है जिसकी हममें से कई लोगों को लालसा होती है—श्रीगुरु के साथ एक गूढ़, फिर भी गहरा मानवीय सम्बन्ध। एक और बात जो इन युवती ने कही वह यह थी कि इस वर्ष अभ्यास-पुस्तिका पर कार्य करना आरम्भ करने के लिए अभी देर नहीं हुई है।

***

गुरुपूर्णिमा के माह में, हम जिस सिद्धयोग अभ्यास पर केन्द्रण करते हैं वह है दक्षिणा, श्रीगुरु को आर्थिक रूप में, धनराशि के रूप में भेंट अर्पित करने का अभ्यास। इस वर्ष हम वेबसाइट पर जाकर एक उत्कृष्ट आमन्त्रण 'Invitation in Honor of Gurupurnima' देख सकते हैं जो हमें दक्षिणा के

आध्यात्मिक अभ्यास के साथ जुड़ने व कार्य करने के लिए आमन्त्रित करता है। मैंने हमेशा देखा है कि दक्षिणा श्रीगुरु से प्राप्त कृपा व प्रज्ञान की महत्ता और विशालता का सम्मान करने का उपयुक्त तरीक़ा है, फिर भले ही हमें अपनी भेंट हमेशा अपर्याप्त ही क्यों न लगे। कई भजनों और अभंगों में हम सुनते हैं कि भारत के सन्त-कवि अपने श्रीगुरु से प्राप्त मुक्तिप्रदायिनी कृपा के लिए अगाध प्रेम और कृतज्ञता को अभिव्यक्त करते हैं, और फिर भी वे यह अभिस्वीकृति करते हैं कि उनके मन में एक दुविधा है : श्रीगुरु को इसके बदले में क्या अर्पित करें? जैसा कि सन्त ब्रह्मानन्द गाते हैं, "मैं श्रीगुरुदेव को क्या भेंट अर्पित कर सकता हूँ? तीनों लोकों में मुझे कोई भी वस्तु भेंट करने योग्य नहीं लगती, क्योंकि कोई भी वस्तु उस परम आनन्द के समान कभी नहीं हो सकती जो उन्होंने मुझे दिया है, यहाँ तक कि धन और माणिकों के पर्वत भी नहीं।"

ऐसा होते हुए भी हम भेंट अर्पित करना *चाहते हैं*—और यह महत्त्वपूर्ण है कि हम ऐसा करें। देने का कृत्य जो जीवनचक्र का एक नैसर्गिक भाग है, उस अन्तर-रूपान्तरण को पोषित करता है, जिसे श्रीगुरु ने हमारे अन्तर में आरम्भ किया है। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप मार्क मॅक्लॉग्लिन द्वारा लिखित व्याख्या, 'देने व पाने का रूपान्तरणकारी चक्र' को पढ़ें जिससे आप देने व पाने की कीमियागरी की एक विस्तृत समझ प्राप्त कर सकते हैं।

भेंट अर्पित करने के स्वरूप पर मनन करने के बाद मैंने निर्णय लिया कि मैं अपने दक्षिणा के अभ्यास को पुनः नवीन करना चाहता हूँ। कई वर्षों से मैं अपनी दक्षिणा मुख्यतः 'Siddha Yoga Monthly Dakshina Practice' [मासिक दक्षिणा अर्पित करने का सिद्धयोग अभ्यास] के माध्यम से अपने बैंक खाते से ऑटोमैटिक ट्रान्स्फ़र द्वारा अर्पित करता आया हूँ। मेरी मासिक भेंट इस समझ से भी प्रेरित है कि दक्षिणा अर्पित करने का मेरा नियमित अभ्यास सिद्धयोग मिशन को निरन्तर रूप से सम्बल प्रदान करता है। साथ ही, जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ के सिद्धयोग ध्यान-केन्द्र पर सत्संग में हॉल में श्रीगुरुमाई के आसन के समक्ष नमन करते समय भी मैं दक्षिणा अर्पित करता आया हूँ। इस परिप्रेक्ष्य में मुझे अक्सर श्रीगुरुमाई के साथ अपने सम्बन्ध का गहन अनुभव हुआ—अपने जीवन में उनकी कृपा व उपस्थिति के लिए मैं कृतज्ञ रहा। अब, जब वैश्विक महामारी के दौरान सिद्धयोग ध्यान-केन्द्र और संकीर्तन एवं ध्यान-केन्द्र बन्द हैं तो मुझे एहसास हुआ कि मैं दर्शन और दक्षिणा अर्पित करने के उन क्षणों की कितनी कमी महसूस करता हूँ।

और मुझे लगा कि मैं इस परिस्थिति को आशीर्वाद में बदल सकता हूँ। मैंने देखा कि मासिक दक्षिणा के अभ्यास में भाग लेने के साथ-साथ, हर रात मैं और मेरी पत्नी नामसंकीर्तन व ध्यान करने के बाद अपने ध्यान के कमरे में सजी पूजा में दक्षिणा अर्पित कर सकते हैं। ऐसा करते हुए अब कुछ समय हो गया है और मैं कहूँगा कि यह अनुभव सचमुच गहरा है—यह प्रेम और जुड़ाव की उस भावना को

जगाता है जिसे मैं अपने सिद्धयोग अभ्यासों में महसूस करना चाहता हूँ। और हर महीने के अन्त में मैं ऑनलाइन भेंट के रूप में इस दक्षिणा को भी एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन भेज दूँगा। और बस! इस तरीक़े से मैं हर रात जुड़ाव के उस क्षण का आनन्द उठा सकता हूँ।

दक्षिणा अर्पित करने की शक्ति के इस प्रत्यक्ष अनुभव ने मुझे प्रेरित किया है कि मैं उस उपाय की खोज करूँ ताकि मैं वचनबद्धता के साथ लम्बे समय तक किए गए नियमित अभ्यास के लाभ के प्रति अधिक सजग हो जाऊँ। मैंने यह तय किया है कि मैं हर माह के पहले दिन 'देने व पाने का रूपान्तरणकारी चक्र' इस व्याख्या को दोबारा पढ़ूँगा। उस दिन, मैं दक्षिणा अर्पित करने के अपने अनुभव के बारे में जर्नल में भी लिखूँगा और श्रीगुरु से मेरे जुड़ाव व उनके प्रति प्रेम की मेरी भावना में जो रूपान्तरण हो रहे हैं, मैं उनके बारे में भी लिखूँगा।

मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि इस माह आप इस बारे में विचार करें कि आप इस मूलभूत सिद्धयोग अभ्यास के अपने अनुभव को और भी अधिक जीवन्त व गहरा कैसे बना सकते हैं।

गुरुपूर्णिमा के इस माह में, हममें से हरेक के पास यह अवसर है कि हम अपने मन व हृदय को अपने अन्तर में आसीन श्रीगुरुदेव के पूर्ण प्रकाश की ओर मोड़ें और उस प्रकाश में मुदित हो जाएँ। ऐसी शुभकामना है कि यह माह हममें से हरेक के लिए *वैभव से परिपूर्ण* हो!

आदर सहित,
पॉल हॉकवुड

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।